29-10-67　　　　ओमशान्ती　　　　रात्री क्लास

अनुभव सुनाया बच्चों ने कि मधुबन में क्या-2 मीठा लगता है। तुम बच्चे जानते हो कि
अब शान्ती धाम जा रहे हैं। तुम्हारे सिवाय कोई नहीं जिसको यह पता हो। तुम यहां सुनते
रहेंगे कि अब बाप को याद करते-2 घर जाना है। पुरानी दुनिया अच्छी नहीं लगती।
दिल होती है घर जावेंगे। कब-2 वैराग आता है। बस शान्ति में जाकर बैठे। और हां नहीं
वैराग आता है। दुनियाँ से दिल उठ जाती है। काम-काज भी करते रहते हैं परन्तु आत्मा उपराम
में उपराम हूँ। इस पुरानी झूठी दुनियां में अब अच्छा नहीं लगता है। मालूम तो पड़ा अब वापस
जाना है। वहाँ अपरमअपार सुख है। बहुत है, बाप नया महल बनाता है तो खुशी तो होती है नां।
गरीब से शाहुकार बनते हैं तो गरीबी याद तो रहती है नां। तुम बच्चों को अब इस पुरानी दुनियां
से वैराग है। बाकी थोड़ा दिन है। अब जाकर अपने घर में विश्राम लूं। दिल चाहता है कि अब
विश्राम पावें। जैसे बाबा कहते हैं नां बच्चे यहां रिफ्रेश होते हैं विश्राम भी पाते हैं। शान्ती सुख -
पावेंगे। दुःख की बात नहीं। नां बिमारी आदि होगी। इस लिये इस दुनियां से वैराग आता है।
सर्विस तो करनी है। बुद्धी में है कि अब जाते हैं। वैराग आता है विश्राम पाने लिये। आधा कल्प
दुःख में ठोकरें खाई हैं दो-2 हुये हैं। अब बाप सामने बैठे हैं नां। बच्चों को सिमृती आती है कि
हम विश्व का मालिक थे। अब फिर बनते हैं। बाबा ने इस दुनिया से निकाला है। भक्ति मार्ग
का प्रभाव भी बहुत है नां। भक्ति में ~~बड़~~ बड़ी खुशी है। अब हम समझते हैं कि भक्ति से
तो नीचे ही गिरे हैं। अब जाते हैं अपने घर। कोई से दिल नहीं लगती। कहां हम स्वर्ग में जाते हैं
कहां यह नर्क का किचरा। तुम हो राजयोगी राज-रिषी भी हो। रिषी तपस्वी होते हैं।
तपस्या को यात्रा भी कहा जाता है नां। तुम जानते हो और कोई को रस्ते का पता नहीं है। ठोकरें
खाते रहते हो। आगे मेज बनाते थे। अब तुम समझते हो कि भक्ति मार्ग में दर-2 ठोकरें
खाते हैं। बाप समझाते हैं कि भक्ति की बाउँडरी अब क्रास कर इस पार जाते हो।
भक्ति के पीछे है ज्ञान। दिन। तो अब दिल होगी अब उस पार जायें। यहां तो बहुत -
हंगामा है। खट-पिट बैठ गोज्जरी। शान्ति वाले को भी अशान्त करें। नैचरल कैलेमीटीज
भी बैठे-2 अशान्त कर देगी। कहीं भी सुख नहीं होगा पिछाड़ी के समय। बच्चों को यह
याद रहना चाहिये। शान्त करके बैठना नहीं है। कर्म तो करना है नां। यह बेहद का नाटक है
5000 वर्ष का। इसमें 4.5 घन्टे सर्विस है। इसमें 84 जन्मों की सर्विस है। हमको यह
पार्ट जरूर बजाना है। यह भी अविनाशी है। कब पुराना नहीं हो सकता। हार और जीत का नाटक
है। तुम बच्चों को निश्चय है। जास्ती मेहनत करेंगे तो ऊंच पद पावेंगे। भक्ति जास्ती
की होगी तो ज्ञान भी बहुत उठावेंगे। बाप कहते हैं कि शंकराचार्य भी मेरी भक्ति करते हैं।
तुम बच्चों द्वारा मालूम पड़ेगा कि अब बाप आये हैं ले जाने। सतयुग में सब होते हैं
पूज्य। पवित्र। यहां है पुजारी अपवित्र। कर्म भी जरूर करना है। जानते हो कि हम याद की
यात्रा पर हैं। खुशी भी होती है। स्टुडेन्ट लाईफ इज दी बेस्ट लाईफ। अलबेले रहते हैं। फिर
तो परिवार की वृद्धी होने पर अपने ही जाल में फंस जाते हैं। एक से दो फिर 4.6
हो जाते हैं। वहां सुख भी है। और बरडन (बोझा) भी बहुत है। इस समय ऐसे आः सोमेन
खड़ा है। पुत्रवान भव आयुष्वान भव तुम बन जाते हो। सन्यासी लोग आर्शीवाद करते हैं।
वास्तव में सन्यासियों को आर्शीवाद करने का हक नहीं है पुत्रवान भव, धनवान भव
आयुष्वान भव यह आर्शीवाद कैसे कर सकेंगे? परन्तु उनके आगे माथा टेकते
हैं तो कह देते हैं। बाप आर्शीवाद नहीं करते। समझाते हैं कि सतयुग में आयु
बड़ी होती है। बच्चा भी एक होता है। वहां पवित्र हैं। अब तुम पुरुषार्थ करते हो सतो-
प्रधान बनने लिए। तो आयु बढ़ जावेगी। और कोई उपाय नहीं है आयु बढ़ाने का
बाप को याद करने से तो तुम सतोप्रधान बन ही जावेंगे। सम्पूर्ण तो संगम-

29-10-67 ॐ

एक्सचेंज करते हो हैं। भक्ति मार्ग में यह करते आए हो। ईश्वर अर्थ देते हैं ना। यहाँ तो स्थापना हो रही है। सुदामा ने चावल दिये तो महल मिल गया था। जन्म-जन्म लिए। भक्ति मार्ग में तो इतना मिल न सके। बहुत-2 फर्क है। बच्चों को बुद्धि में यह रहे कि अब नाटक पूरा होता है। हम जाते हैं अपने घर। यह भूलो मत। [illegible] मत छोड़ो। कल्प-2 तुम राम द्वारा जीत रावण द्वारा हार खाते हो। यह संगमयुग भी लिखना चाहिए कि मनुष्य ईश्वर होकर भी सृष्टि के आ: म: अ: को नहीं जानते हैं। वो बताई देते हैं। तो मनुष्य जागेंगे। उन्हें तो समझा सकते हो विराट रूप भी है। ब्राह्मण कुल, दैवी कुल, क्षत्री, वैश्य, शूद्र कुल। यह है बाजोली आगे तो— बाजोली ही करते - करते तीर्थों पर जाते थे।

→ 31-10-67 रात्रि क्लास :—> जैसे तुम बच्चे इस दुनियाँ को भूलते जाते हो वैसे ही कोशिश की जाती है सब भूलने की। यह तो जैसे कि भूले हुए हैं। कब्रिस्तान से दिल तो लगाना नहीं है। अब बच्चे सुख शान्ति की यात्रा तरफ जा रहे हैं। वहाँ से फिर लौटना नहीं है। तुम यात्रा पर चले जावेंगे। फिर नई दुनियाँ में आकर पहुँचेंगे। यह तुम बच्चों की बुद्धि में है। समझाया जाता है तो भी समझने में कितना समय लगता है। प्रदर्शनी में ओपीनियन आदि लिख कर देते हैं। बहुत अच्छा-2 भी कहते हैं परन्तु यह नहीं समझते हैं कि बाप से वर्सा ले रहे हैं विश्व का मालिक बनने। यह बुद्धि में नहीं बैठता है कि बाप विश्व का मालिक बना रहे हैं। यह तो कुछ समझा ही नहीं। L.N विश्व का मालिक थे ना। अब योग बल से फिर बन रहे हैं। बाप ही विश्व का मालिक बनाते हैं। किसको भी बुद्धि में नहीं बैठता है तो जरूर कुछ समझाने वालों का रोला है। बताना है कि बाप आया हुआ है विश्व का मालिक बनाने। अब याद की यात्रा से हम यह बनने पुरुषार्थ कर रहे हैं। तुमको भी करना चाहिए। लिखे कि यह बहुत अच्छा समझाया कि हम भी याद करने लग पड़े। तो क्या समझाने की भूल है। वो तकदीर में नहीं है। कितना सहज समझाया जाता है। इनका राज्य था। चित्र भी हैं यह— विश्व के मालिक थे। आदि स: दे: दे: धर्म था। फिर चक्र रिपीट होना है। बाप हमको राज योग सिखा रहे हैं। तुम भी पढ़ो। बाप कहते हैं कि मामेकम् याद करो तब तुम पावन बनेंगे। इतनी सहज बात बुद्धि में नहीं बैठती वो योग का बल नहीं है। बाबा अक्सर करके यही रोला निकालते हैं। याद की यात्रा में नहीं रहते। देह अभिमान में रहने कारण कोई को तीर लगता नहीं। कट खाई हुई तलवार ठीक चलती नहीं। मेहनत भी याद की यात्रा में है। यह तो जरूर है कि जो याद की यात्रा में रहेंगे वो अच्छा पद पावेंगे। बच्चों को बाप जास्ती तकलीफ नहीं देते। भक्ति मार्ग में तो बहुत तुमने पैसे बरबाद किये हैं, पर कोई जास्ती नहीं खाता है। वो बाकी उल्टा - सुल्टा खर्चा करते हैं। भगवानोवाच है कि मैं तुमको बहुत सहज ज्ञान सुनाता हूँ। यह बात है बाप की किसको जानना। तुम बच्चे समझते हो कि करप्शनस तो बहुत है। गवर्मेन्ट के आफीसर्स कितना कमाते हैं। वो धन दौलत तो सब खत्म हो जाना है। तुम विश्व का मालिक बन रहे हो तो कितनी खुशी होनी चाहिए। हम बाप से बेहद की बादशाही ले रहे हैं। कैसे? सो आकर समझो तो तुम पापात्मा से पुण्यात्मा बन जावेंगे। बाप को समझते नहीं हैं। यों हैं सभी बाप के। हे भगवान - हे गॉड कहते भी हैं परन्तु जब सन्मुख आवें तब समझा सकें। किसको दुःख भी नहीं देना चाहिए हँसी मजाक में भी कोई को दुःख दिया तो भी नालायक है। बाप कहते हैं कि कब किसको दुःख नहीं देना है। ऐसे ही फिर दिल से उतर जाते हैं। चार्ट रखने से ध्यान रहेगा दुःख तो नहीं दिया। Om

Om